राकेश शर्मा की प्रेरक कहानी

अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय की।

अशोक चक्र और सोवियत संघ ने "हीरो ऑफ द सोवियत यूनियन" से सम्मानित किया

क्या एक साधारण भारतीय लड़का अपनी मेहनत से अंतरिक्ष तक पहुँच सकता है? यह कहानी है राकेश शर्मा की — अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय की।

13 जनवरी 1949 को पंजाब के पटियाला में जन्मे राकेश शर्मा की पढ़ाई हैदराबाद में हुई। बचपन से ही विज्ञान और आसमान में उनकी गहरी रुचि थी। 1970 में वे भारतीय वायुसेना में फाइटर पायलट बने और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में मिग-21 से 21 युद्धक उड़ानें भरकर बहादुरी से देश की सेवा की।

1982 में उन्हें भारत-सोवियत संयुक्त अंतरिक्ष मिशन के लिए चुना गया। 3 अप्रैल 1984 को वे सोवियत यान Soyuz T-11 से अंतरिक्ष रवाना हुए और सैल्युत-7 स्टेशन पर लगभग 8 दिन बिताए। इसी के साथ वे अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय और विश्व के 128वें अंतरिक्ष यात्री बने।

जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अंतरिक्ष से पूछा — "भारत कैसा दिखता है?" — तो उन्होंने वह अमर वाक्य कहा: "सारे जहाँ से अच्छा।"

उनकी इस उपलब्धि के लिए भारत सरकार ने उन्हें अशोक चक्र और सोवियत संघ ने "हीरो ऑफ द सोवियत यूनियन" से सम्मानित किया। उनकी प्रेरणा से ही आगे चलकर कल्पना चावला जैसी भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्रियों ने भी अंतरिक्ष की उड़ान भरी, और 2025 में शुभांशु शुक्ला ने 41 वर्षों बाद फिर से भारत का नाम अंतरिक्ष में रोशन किया।

सीख: बड़े सपने देखने वालों के लिए कोई मंज़िल असंभव नहीं। मेहनत, अनुशासन और आत्मविश्वास से ही सफलता मिलती है। आइए संकल्प लें — मन से पढ़ाई करें, बड़े सपने देखें और देश का नाम रोशन करें।

Edu Bright Pages — सपने वही सच होते हैं जिन्हें पूरा करने के लिए हम हर दिन मेहनत करते हैं।